मुहम्मद मुस्तफा आये बहारों पर बहार आयी
ज़मीं को चूमने जन्नत की खुशबु बार बार आयी

जनाबे आमेना का चाँद जब चमका ज़माने में
कमर की चांदनी क़दमों पे होने को निसार आयी

हलीमा दो जहां क़ुर्बान हों तेरे मुक़द्दर पर
तेरे कच्चे से घर में रेहमते परवरदिगार आयी

बड़ी मायूस थी दायी हलीमा जब गयी मक्के
मगर आयी तो लेके दो जहां का ताजदार आयी

रबीउल नूर की सुबह मक्का में फैली खबर
वो रहमत दो दुनिया की है अब्दुल्लाह के घर आ गई

हलीमा सादिया ने आपको देखा और कहा ये
प्रकाश कहाँ से आया?

मैं मिलाद मुस्तफा को क्यों मनाऊं न कि उनके जहीर को?
जिनके आने से संसार अंधकार से निकला

जबी तो है महक उठी ये आलम की फ़ज़ा सारी
है गेसू चूमकर उनके नसीमे खुशगवार आयी

वो आये तो मनादि हो गयी साईम ज़माने में
बहार आयी बहार आयी मदीने में बहार आयी